Mahamati Prannath

Mahamati Prannath was born on 26th October, 1618 in Jamnagar, Gujarat. His childhood name was Mehraj Thakur. His father, Keshav Thakur, was a Diwan in the state of Jamnagar. Mehraj's mother Smt. Dhanbai, was a pious lady. He was the fourth amongst their five sons.

At an early age, Mehraj was well versed in wordly knowledge. He was bold and aggressive and had good aptitude for spiritual knowledge. He came to listen to Shri Devchandraji's discourses at the early age of twelve. Shri Devchandra saw in him a great visionary who was to carry on the work of awakening the souls.

Mehraj was with his Guru for three weeks. In this period, every aspect of spiritual, political, religious and social matters, was discussed and plan for the future was drawn up. After bestowing his powers and blessings on Mehraj, Shri Devchandra left the mortal world and assigned his job of Jagni to Mehraj. Mehraj later disclosed that Lord's consort, Shyama, working through Devchandra, had made him her instrument to perform the great task of taking the divine souls back to their abode - Paramdham.

While fulfilling this assigned job, Mehraj - Mahamati Prannath - brought many changes into the Hindu society. While traveling throughout the country, he talked to many people in their language. That is the reason why there are six languages - Gujarati, Sindhi, Arabic, Persian, Urdu, Hindi and also words from many other prevalent languages in his works called Kuljam Swarup.

In his task of promulgating the faith, Mahamati Prannath travelled to every corner of India and to the Arab lands: Muscat, Basra and to Bandar Abbas in Iran. In India he went to Junagarh, Thatthanagar, Naliya, Khambhaliya. In Surat, he established the holy shrine of Shri Mahamangalpuri Dham.

Mahamati Prannath never stayed in one place for long. Inspite of the difficulties of traveling, he moved around from place to place to awaken the divine souls. At that time, the Hindus were divided in the name of caste, creed, rituals etc. Exploitation of the poor, downtrodden and low castes was a common feature. Women were regarded as a low species, not allowed to remarry even if they became widows at an early age. Women were not allowed to read scriptures or to receive the sacred mantras. Sati or bride burning was in vogue. Mahamati Prannath, in his travels and discourses, tried to reform the Hindu society. He gave "Tartam Mantra" to women. Some of them became preachers and started many centers for bringing awareness into the society.

During his travels, Mahamati met many saints and tried to unite them so that they could face the growing tyranny of the Mughal King, Auragzeb. He attended many religious congregations like the Kumbh in Haridwar and tried to convince many Hindu saints that instead of praying to thousands of deities, we should pray to the Lord Supreme - the Adwait Brahman. In Haridwar, many saints and learned people were impressed by his philosophy. In Haridwar, in the year Samvat 1735, the great Kumbha Mela took place and there Mahamati Prannath introduced a number of people to Nijanand Sampraday. Followers of Shiva, of Shakti and of Vishnu; the Four Sects, the Dasnam, ascetics, the followers of the six philosophies; all had realized the unparalleled wisdom of Mahamati Prannath.

In the year 1740 of the Hindu calendar, he met Maharaja Chhatrasal. Under the protection of Chhatrasal, the shrine of Padmavatipuri Dham was established and it was during his eleven years in Panna, Mahamati Prannath spoke the inspired message of the Tartam Vani or Kuljam Swarup, the sacred book which is the essence of all sacred books. The Kuljam Swarup contains fourteen books in 18758 verses which were compiled by his followers, as they were spoken by the Lord. Thus the Kuljam Swarup is the most authentic scripture of the world to Pranamis. Most of the books of Kuljam Swarup are in Hindi – Hindustani, in Devnagri script.

He emphasized the oneness of the Muslim and Hindu faiths and established a universal religion - a religion for all mankind and called it "Nijanand Dharma" or the blissful religion for the souls.

In the year 1751 of the Hindu calendar, on the fourth day of the dark half of Shravan, the fifth month, Mahamati Prannath completed his purpose in this world and prepared to reside in the Highest Abode, "Paramdham". He passed down to Maharaja Chhatrasal the task of awakening the souls.

Besides India, the followers of Mahamati Prannath are spread over many countries, namely- Nepal, Bhutan, USA, Canada, UK, Australia, Singapore etc. Their number exceeds five million and about six hundred centres are continuously engaged in extending their services in the field of education, social service, medical facilities, other welfare activities and spiritual awakening programmes.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Mahamati Prannath.

Credits:

Text	:	Based on the information received from proponent
Stamp/ FDC/ Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts India

महामति प्राणनाथ
MAHAMATI PRANNATH

विवरणिका BROCHURE

महामति प्राणनाथ

महामति प्राणनाथ का जन्म 26 अक्तूबर, 1618 को जामनगर, गुजरात में हुआ। बचपन में उनका नाम मेहराज ठाकुर था। उनके पिता, केशव ठाकुर जामनगर रियासत के दीवान थे और उनकी माता, श्रीमती धनबाई धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। केशव ठाकुर और श्रीमती धनबाई के पांच पुत्र थे और मेहराज ठाकुर उनकी चौथी संतान थे।

मेहराज ठाकुर कम उम्र से ही ज्ञानी और समझदार थे। वे साहसी एवं प्रबल विचारों वाले व्यक्ति थे और आध्यात्मिक ज्ञान की ओर उनका रूझान काफी अधिक था। मात्र 12 वर्ष की आयु में ही वे श्री देवचंद्रजी के उपदेश सुनने पहुंचे। श्री देवचंद्रजी ने मेहराज ठाकुर में जनमानस को जागृत करने वाले महान द्रष्टा की छवि देखी।

मेहराज तीन सप्ताह तक अपने गुरु के साथ रहे। इस दौरान, उन्होंने आध्यात्मिक, राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक विषयों पर विमर्श किया और भविष्य की कार्य दिशा निर्धारित की। श्री देवचंद्र ने मेहराज ठाकुर को अपनी समस्त शक्तियां और आशीर्वाद प्रदान किया और जगनी का दायित्व उन्हें सौंपकर अपना शरीर त्याग दिया। श्री मेहराज ठाकुर ने बाद में उल्लेख किया कि देवचंद्रजी के माध्यम से भगवान की संगिनी श्यामा ने ही उन्हें पवित्र आत्माओं को उनके वास्तविक आलय अर्थात् परमधाम तक पहुंचाने का दायित्व सौंपा था।

अपने इसी दायित्व का निर्वहन करते हुए श्री मेहराज अर्थात् महामति प्राणनाथ ने हिंदू समाज में अनेक परिवर्तन किए। उन्होंने देशभर की यात्रा की और आम लोगों से उन्हीं की भाषा में विचार–विमर्श किया। यही कारण है कि कुलजम स्वरूप नामक उनकी कृति में गुजराती, सिंधी, अरबी, फारसी, उर्दू और हिंदी सहित कई अन्य प्रचलित भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं।

धर्म के प्रचार–प्रसार के कार्य में प्राणनाथ ने भारत के कोने–कोने की यात्रा की और इसके साथ–साथ वे अरब में मस्कट और बसरा तथा ईरान में बंदार अब्बास तक गए। भारत में उन्होंने जूनागढ़, थट्टानगर, नलिया, खंभालिया की यात्रा की। सूरत में उन्होंने श्री महामंगलपुरी धाम की स्थापना की।

महामति प्राणनाथ कभी भी लंबे समय तक एक स्थान पर नहीं रहे। यात्राओं के दौरान आने वाली कठिनाइयों के बावजूद वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहे और जनमानस को जागृत करते रहे। उस दौर में हिंदू समाज जाति, संप्रदाय और रीति–रिवाजों के आधार पर बंटा हुआ था। निर्धन, दलित और निम्न वर्गों के लोगों का शोषण सामान्य बात थी। महिलाओं को तुच्छ माना जाता था और कम उम्र में विधवा हो जाने के बावजूद उन्हें पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी। महिलाओं को धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करने या पवित्र मंत्र प्राप्त करने की भी इजाजत नहीं थी। सती प्रथा प्रचलन में थी। महामति प्राणनाथ ने अपनी यात्राओं और उपदेशों के माध्यम से हिंदू समाज में सुधार लाने का प्रयास किया। उन्होंने महिलाओं को "तारतम मंत्र" दिया। इनमें से अनेक महिलाएं धर्मोपदेशक बन गईं और इन्होंने समाज में जागरूकता लाने के उद्देश्य से कई केंद्र स्थापित किए।

अपनी यात्राओं के दौरान, महामति ने अनेक संतों से भेंट की और प्रयास किया कि संत समाज को एकजुट किया जाए ताकि वे मिलकर मुगल सम्राट औरंगजेब के जुल्मों का सामना कर पाएं। वे हरिद्वार में कुम्भ जैसे अनेक धार्मिक समागमों में भी गए और साधु–संतों को यह समझाने का भरसक प्रयास किया कि हजारों देवताओं की पूजा करने के बजाए परम ब्रह्म परमेश्वर अर्थात् अद्वैत ब्रह्म की पूजा करनी चाहिए। हरिद्वार में अनेक संत और विद्वतजन उनके इस दर्शन से अत्यंत प्रभावित हुए। सम्वत् 1735 में हरिद्वार में ही कुम्भ मेला लगा और यहां महामति प्राणनाथ ने बड़ी संख्या में लोगों को निजानंद संप्रदाय की दीक्षा दी। शैव, शाक्त और वैष्णव समाज के साथ–साथ चारों संप्रदायों के अनुयायियों, दसनम, ऋषि मुनियों और छहों दर्शन परंपराओं के अनुयायियों सहित सभी ने महामति प्राणनाथ की तीक्ष्ण प्रज्ञा शक्ति को पहचाना।

हिंदू कैलेंडर के अनुसार सम्वत् 1740 में महामति प्राणनाथ महाराजा छत्रसाल से मिले। छत्रसाल के संरक्षण में पदमावतीपुरी धाम की स्थापना हुई। पन्ना में 11 वर्षों के निवास के दौरान महामति प्राणनाथ ने तारतम वाणी अर्थात् कुलजम स्वरूप का संदेश दिया। इस पवित्र ग्रंथ में सभी पवित्र ग्रंथों का सारतत्व मौजूद है। कुलजम स्वरूप की कुल 14 पुस्तकें हैं। इनमें 18758 पद हैं, जिनका महामति प्राणनाथ के अनुयायियों द्वारा शब्दशः संकलन किया गया है। कुलजम स्वरूप, प्रणामी संप्रदाय के लिए विश्व का सबसे प्रामाणिक ग्रंथ है। कुलजम स्वरूप की अधिकतर पुस्तकें देवनागरी लिपि में हिंदी–हिंदुस्तानी में लिखी गई हैं।

महामति प्राणनाथ ने मुस्लिम और हिंदू संप्रदाय में एकता पर बल दिया और उन्होंने मानवता के लिए एक वैश्विक धर्म की स्थापना की और इसे "निजानंद धर्म" अर्थात् मानवता के परमानंद धर्म का नाम दिया।

सम्वत् 1751 में श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को महामति प्राणनाथ के लौकिक जीवन का उद्देश्य पूरा हुआ और महाराजा छत्रसाल को जनमानस को जागृत करने का दायित्व सौंप कर स्वयं परमधाम की राह ली।

भारत के अतिरिक्त महामति प्राणनाथ के अनुयायी अनेक अन्य देशों जैसे नेपाल, भूटान, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, आस्ट्रेलिया, सिंगापुर आदि में भी हैं। इनकी संख्या 50 लाख से अधिक है। महामति प्राणनाथ के अनुयायी लगभग 600 केंद्रों का संचालन करते हैं, जिनके माध्यम से शिक्षा, समाज सेवा, चिकित्सा सुविधाएं, अन्य कल्याणकारी कार्यक्रम और आध्यात्मिक जागृति के कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

डाक विभाग, महामति प्राणनाथ पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण मोहर : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसा
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 400320
Stamps Printed	: 400320
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00